بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol -23
Issue - 10

राह-ए-ईमान

अक्टूबर
2021 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (गुनाह से मुक्ति किस प्रकार मिल सकती है?).....4
5. सम्पादकीय (जिहाद और इस्लाम).....6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 3-9-2021).....8
7. ज़िक्रे इलाही (अर्थात अल्लाह को याद करना और उसका नाम जपना).....12
8. सिलसिला अहमदिया भाग-29.....21
9. मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन.....23
10. अहमदिय्या जमाअत में दीक्षित होने (बैअत करने) की शर्तें 26
11. वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है.....28

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ اعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَ فَضْلٍ ۙ وَّ يَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۱۷۶﴾

अनुवाद:- अत: वे लोग जो अल्लाह पर ईमान ले आए और उस को मज़बूती से पकड़ लिया तो वह अवश्य उन्हें अपनी रहमत और अपने फ़ज़ल में दाख़िल करेगा और उन्हें अपनी ओर सीधी राह दिखाएगा। (सूरह निसा आयत- 130)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद:- हज़रत ओसामा बिन ज़ैद वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें जुहैना क़बीला के नख़लिस्तान की तरफ भेजा जिन्होंने कुछ मुसलमानों को क़त्ल करके जला दिया था। हम ने सुबह उनके चश्मों पर ही उन्हें जा पकड़ा। मैंने और एक अंसारी ने उनके एक आदमी का पीछा किया। जब हमने उसे जा लिया और उसे पकड़ लिया तो वह बोल उठा ख़ुदा तआला के सिवा कोई उपास्य नहीं। अर्थात उस ने व्यक्त किया कि वह मुसलमान है। इस बात पर मेरा अंसारी साथी तो रुक गया लेकिन मैंने उसको मार के छोड़ा। जब हम मदीना लौटे और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस घटना का वर्णन किया तो आपने फरमाया: हे ओसामा ! कलमा तौहीद पढ़ लेने के बावजूद तुम ने उसे मार दिया? तूने उसके ला इलाह इल्लल्लाह कहने के बावजूद उसकी हत्या कर दी? आप बार-बार यह दोहराते रहे थे यहां तक कि मैंने इच्छा की, काश मैं आज से पहले मुसलमान ही न हुआ होता! (ताकि यह ग़लती मुझ से न होती)

और एक रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया- जबकि उसने 'ला इलाहा इल्लल्लाह' को कबूल कर लिया तो भी तूने उस की हत्या कर दी? मैंने कहा: हे अल्लाह के रसूल ! उसने हथियार के डर से ऐसा कहा था। आपने फरमाया- तो क्यों न तूने उसका दिल चीर कर देखा कि उसने दिल से कहा है या नहीं। हुज़ूर ने यह बात इतनी बार दोहराई कि मैं उम्मीद करने लगा कि काश मैं आज ही मुसलमान हुआ होता। (ताकि यह ग़लती मेरे कामों में न लिखी जाती)

(बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी)

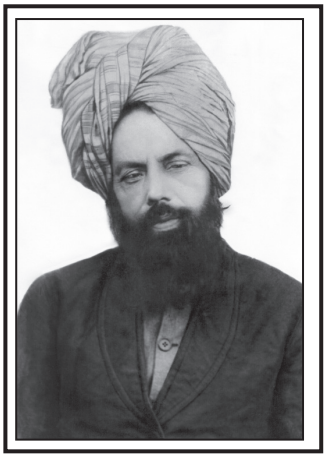

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

वुज़ू और नमाज़

नमाज़ का पढ़ना और वुज़ू का करना अपने साथ चिकित्सा संबंधी लाभ भी रखता है। चिकित्सक कहते हैं कि यदि कोई प्रतिदिन मुंह न धोए तो आंख आ जाती है (आंख दु:खने लगती है- एडिटर) और यह मोतियाबिंद का आरंभिक आधार है। इससे और भी बहुत सी बीमारियां पैदा हो जाती हैं। फिर बतलाओ कि वुज़ू करते हुए क्यों मौत आती है। कितनी अच्छी बात है मुंह में पानी डालकर कुल्ली करना होता है, दातुन करने से मुंह की बदबू दूर होती है। दांत मज़बूत हो जाते हैं और दांतो की मज़बूती भोजन को अच्छी तरह चबाने और शीघ्र हज़्म हो जाने का कारण होती है। फिर नाक साफ़ करना होता है। अगर नाक में कोई बदबू जाए तो दिमाग़ को दूषित कर देती है। अब बतलाओ कि वुज़ू करने में क्या बुराई है? इसके बाद वह अल्लाह के समक्ष अपनी चाहतें लेकर जाता है और उसको अपनी चाहतों के प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है, दुआ करने के लिए फ़ुर्सत मिलती है। ज़ूयादा से ज़ूयादा नमाज़ में एक घंटा लग जाता है। यद्यपि कई नमाज़ें तो 15 मिनट से भी कम समय में अदा हो जाती हैं। फिर बड़े आश्चर्य की बात है कि नमाज़ के समय को समय का नष्ट करना समझा जाता है, जिसमें इतनी भलाइयां है और फ़ायदे हैं। यदि सारा दिन और सारी रात नीच और व्यर्थ बातों या खेल तमाशो में नष्ट कर दें तो उसका नाम व्यस्तता रखा जाता है। यदि मज़बूत ईमान होता, मज़बूत तो एक तरफ़, यदि ईमान ही होता तो यह हालत क्यों होती। और यहां तक नौबत क्यों पहुंचती।

नासेह (उपदेशक) से नफ़रत करना-

ईमानी हालत इतनी गिरने के बावजूद यदि कोई इस कमज़ोरी का एहसास करवा कर उसका इलाज करना चाहे और वह ऐसी राह बताए कि जिस पर चलकर इन्सान ख़ुदा से एक ताक़त और साहस पाता है तो उसको काफ़िर और दज्जाल कहा जाता है। मैं कहता हूं कि यदि यह लोग ईमान का एक परिणाम नहीं स्वीकार कर सकते तो कम से कम परिकल्पना कर लें। परिकल्पना करने पर भी तो बड़े-बड़े परिणाम निकलते हैं। देखो! ज्यामिति (रेखा गणित) का सारा दारोमदार परिकल्पना पर ही है। इससे भी कितने लाभ होते हैं। बड़े-बड़े ज्ञानों की बुनियाद सर्वप्रथम परिकल्पना पर ही होती है। अत: यदि ईमान को भी परिकल्पना करके ही मान लेते तो तब भी विश्वास है कि वे ख़ाली हाथ न रहते, पर यहां तो अब यह हाल हो गया है कि वे एकदम से ही इसको एक बेकार चीज़ समझते हैं। (मलफ़ूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 41-42)

रूहानी ख़ज़ायन

गुनाह से मुक्ति कैसे मिल सकती है?

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

... वास्तविक मुक्ति की फ़िलास्फी यही है कि मनुष्य इसी संसार में गुनाह के नर्क (दोज़ख़) से मुक्ति पा जाए। परन्तु तुम सोच लो कि क्या तुम ऐसी कहानियों से गुनाह के नर्क से मुक्ति पा गए या कभी किसी ने इन व्यर्थ किस्सों से जिन में कुछ भी सच्चाई नहीं और जिन का वास्तविक मुक्ति के साथ कोई रिश्ता नहीं मुक्ति पाई है। पूरब और पश्चिम में तलाश करो तुम्हें कभी ऐसे लोग नहीं मिलेंगे जो कभी इन किस्सों से उस वास्तविक पवित्रता तक पहुंच गए हों जिस से ख़ुदा दिखाई दे जाता है। और जिस से न केवल गुनाह से विमुखता होती है स्वर्ग के रूप और सच्चाई के आन्नद आरम्भ हो जाते हैं और मनुष्य की रूह पानी की तरह पिघल कर ख़ुदा की चौखट पर गिर जाती है और आकाश से एक प्रकाश उतरता है और कामवासना सम्बन्धी समस्त अंधकार को दूर कर देता है। इसी प्रकार जब कि तुम प्रकाशमान दिन में चारों ओर ख़िड़कियां खोल दो तो यह प्राकृतिक नियम तुम्हें दिखाई दे जाएगा कि तुरन्त सूर्य का प्रकाश तुम्हारे अन्दर आ जाएगा। परन्तु यदि तुम अपनी खिड़कियां बन्द रखोगे तो केवल किस्से या कहानी से वह प्रकाश तुम्हारे अन्दर नहीं आ सकता तुम्हें प्रकाश लेने के लिए यह अवश्य करना पड़ेगा कि अपने स्थान से उठो और खिड़कियां खोल दो तब प्रकाश स्वयं तुम्हारे अन्दर आ जाएगा और तुम्हारे घर को प्रकाशमान कर देगा क्या कोई केवल पानी की कल्पना से अपनी प्यास बुझा सकता है? बल्कि उसको चाहिए कि गिरते पड़ते पानी के झरने पर पहुंचे और उस पर अपने होंठ रख दे तब उस मधुर जल से सैराब हो जाएगा।

तो वह पानी जिस से तुम सैराब (तृप्त) हो जाओगे और गुनाह की जलन और तपन जाती रहेगी वह विश्वास है। आकाश के नीचे गुनाह से पवित्र होने के लिए इस के अतिरिक्त कोई भी बहाना नहीं, कोई सलीब नहीं जो तुम्हें गुनाह से छुड़ा सके कोई ख़ून(क़त्ल) नहीं जो तुम्हें काम वासना सम्बन्धी भावनाओं से रोक सके। इन बातों का वास्तविक मुक्ति से कोई रिश्ता और सम्बन्ध नहीं। वास्तविकताओं को समझो, सच्चाइयों पर विचार करो और जिस प्रकार संसार की वस्तुओं को परखते हो उस को भी परखो तब तुम्हें शीघ्र समझ आ जाएगा कि सच्चे विश्वास के बिना कोई प्रकाश नहीं जो तुम्हें कामवासना के अंधकार से छुड़ा सके। और पूर्ण प्रतिभा के शुद्ध पानी के बिना तुम्हारी आन्तरिक गन्दगियों को कोई भी धो नहीं सकता और सच को देखने के मधुर पानी के बिना तुम्हारी जलन एवं तपन कभी दूर नहीं हो सकती। झूठा है वह व्यक्ति जो और और उपाय तुम्हें बताता है और मूर्ख है वह इन्सान जो और प्रकार का इलाज करना चाहता है। वे लोग तुम्हें प्रकाश नहीं दे सकते बल्कि और भी अंधकार के गढ़े में डालते हैं और तुम्हें मधुर पानी नहीं देते बल्कि वे और भी जलन और तपन अधिक करते हैं। कोई ख़ून (क़त्ल) तुम्हें लाभ नहीं पहुँचा सकता परन्तु वह ख़ून जो विश्वास के अन्त से स्वयं तुम्हारे अन्दर पैदा हो और कोई सलीब तुम्हें छुड़ा नहीं सकती परन्तु

सन्मार्ग की सलीब अर्थात सच्चाई पर सब्र करना। अत: तुम आंखें खोलो और देखो कि क्या यह सच नहीं कि तुम प्रकाश से ही देख सकते हो न किसी अन्य वस्तु से और केवल सीधे मार्ग से अभीष्ट मंज़िल तक पहुँच सकते हो न किसी अन्य मार्ग से। संसार की वस्तुएं तुम से निकट हैं और धर्म की चीज़ें दूर। तो जो निकट है उन्हीं पर विचार करो और उनका कानून समझ लो और फिर दूर को....उस पर अनुमान लगा लो। क्योंकि वही एक है जिसने यह दोनों कानून बनाए हैं। तुम में से कौन है जो आंखों के बिना देख सकता है या कानों के बिना सुन सकता है या ज़ुबान के बिना बोल सकता है? फिर तुम क्यों उसी कानून से रूहानी बातों में लाभ नहीं उठाते। तुम आंखों के होते हुए किसी ऐसे स्थान पर ठहर सकते हो जो अथाह गढ़े के निकट है या कानों के होते हुए तुम ऐसी आवाज़ से सतर्क नहीं हो सकते जो तुम्हें चोरों के आने की सूचना देती है या ज़ुबान के होते हुए जो तुम्हें कड़वे और मीठे में अन्तर दिखाती है फिर भी कड़वी और ज़हरीली वस्तुएं खा सकते हो जो तुम्हारी ज़ुबान को काटें और तुम्हारे आमाशय में ख़राबी पैदा करें और उल्टियां लाएं और शरीर को सज़ा दें और अन्त में मार दें। तो तुम इन्हीं अंगों से समझ लो कि तुम रूहानी तौर पर भी रूहानी जीवन के लिए इस बात के मुहताज हो कि तुम्हें एक प्रकाश मिले जो बुरे मार्गों की बुराई तुम्हें दिखाई दे और तुम्हें एक आवाज़ मिले जो चोरों और डाकुओं के मार्ग से तुम्हें अलग करे और तुम्हें एक स्वाद मिले जिससे तुम कड़वी, मीठी तथा विष (ज़हर) और विषनाशक में अन्तर कर सको। अत: जिन बातों को मरने से बचने के लिए तुम्हें माँगना चाहिए वे यही हैं। यह किसी प्रकार संभव नहीं कि तुम प्रकाश प्राप्त किए बिना केवल अंधे रह कर फिर किसी के ख़ून से मुक्ति पा जाओ। मुक्ति कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो इस संसार के बाद मिलेगी। सच्ची और निश्चित मुक्ति इसी संसार में मिलती है। वह एक प्रकाश है जो दिलों पर उतरता है और दिखाई देता है कि कौन से तबाही के गढ़े हैं। सच्चाई और हिक्मत के मार्ग पर चलो कि इस से ख़ुदा को पाओगे और अपने दिलों में गर्मी पैदा करो ताकि सच्चाई की ओर हरकत पैदा कर सको। दुर्भाग्यशाली है वह दिल जो ठण्डा पड़ा है और अभागी है वह तबियत जो शोकग्रस्त है और मुर्दा है वह अन्तरात्मा जिसमें चमक नहीं। तो तुम उस डोल से कम न रहो जो कुएं में खाली गिरता और भर कर निकलता है और उस छलनी की विशेषता ग्रहण न करो जिसमें कुछ भी पानी नहीं ठहर सकता, एक मार्ग से आता और दूसरे मार्ग से चला जाता हैं। कोशिश करो कि स्वस्थ हो जाओ और वह संसार की चाहत की तपन की ज़हरीली गर्मी दूर हो जाए जिसके कारण न आंखों में रोशनी है न कान अच्छी तरह से सुन सकते हैं न जीभ का स्वाद ठीक है न हाथों में ज़ोर और न पैरों में शक्ति है। एक सम्बन्ध को काटो ताकि दूसरा सम्बन्ध पैदा हो। एक ओर से दिल को रोको ताकि दूसरी ओर से दिल को मार्ग मिल जाए। पृथ्वी का गन्दा कीड़ा फैंक दो ताकि आकाश का चमकता हीरा तुम्हें प्रदान किया जाए और अपने प्रारम्भ की ओर लौटो वही प्रारम्भिक स्थान जब आदम ख़ुदाई रूह से जीवित किया गया था ताकि तुम्हें समस्त वस्तुओं पर बादशाहत मिले जैसा कि तुम्हारे पिता को मिली।

(पुस्तक- गुनाह से मुक्ति कैसे मिल सकती है? पृष्ठ 27-30)(शेष...)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

जिहाद और इस्लाम

जिहाद को लेकर इस्लाम धर्म पर भिन्न भिन्न प्रकार के आरोप लगते रहते हैं लेकिन वास्तविकता यह है कुछ मुसलमान समूहों ने जिहाद के सही अर्थ न समझने के कारण स्वयं ही संसार को इस्लाम पर ऐतराज़ और आपत्ति का अवसर दिया है। जमाअत् अहमदिया धर्म के नाम पर बाल प्रयोग का सदैव विरोध करती रही है। अहमदिया मुस्लिम जमाअत् के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिहाद के बारे में फ़रमाते हैं:-

"इस्लाम में कभी (धर्म के सम्बन्ध में) बल प्रयोग का पाठ नहीं पढ़ाया। यदि पवित्र क़ुर्आन और समस्त हदीसों और इतिहास की पुस्तकों को ध्यान पूर्वक देखा जाए और जहाँ तक इन्सान के लिए सम्भव है ध्यान से पढ़ा या सुना जाए तो इस विस्तृत ज्ञान के पश्चात् इस निश्चय पर पहुँचेंगे कि मानो यह आक्षेप कि इस्लाम ने धर्म को बल पूर्वक फैलाने के लिए तलवार उठाई है, बिल्कुल निराधार और लज्जास्पद है। यह उन लोगों की धारणा है जिन्होंने वैमनस्यता में पड़कर पवित्र क़ुर्आन और हदीस और इस्लाम की प्रमाणिक ऐतिहासिक पुस्तकों को नहीं देखा अपितु झूठ और देषारोपण से पूरा-पूरा काम लिया। किन्तु मैं जानता हूँ कि वह समय अब निकट आता जाता है कि सत्य के भूखे और प्यासे उन आक्षेपों की वास्तविकता को भली प्रकार जान लेंगे कि क्या उस धर्म को हम बल-पूर्वक फैलाया हुआ कह सकते हैं जिसके धर्म-ग्रन्थ पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट रूप में यह आदेश है कि -

لَآ اِكۡرَاهَ فِى الدِّيۡنِ (सूर: बकर: - 257)

अर्थात् धर्म में दाखिल करने के लिए बल-प्रयोग उचित नहीं। क्या हम विश्व के उस महान अवतार पैग़म्बर-ए-इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर बल प्रयोग का आक्षेप लगा सकते हैं, जिसने मक्का शहर में तेरह वर्ष तक अपने समस्त मित्रों को दिन-रात यही उपदेश दिया कि शरारत का मुक़ाबला मत करो और धैर्य से काम लो। हाँ, जब शत्रुओं की शरारत सीमा पार कर गई और इस्लाम-धर्म को जड़ से मिटा देने के लिए सब क़ौमों ने मिल कर कोशिश की तो उस समय ख़ुदा तआला का स्वाभिमान जाग उठा कि जो लोग तलवार उठाते हैं वह तलवार से ही मारे जाएँ। अन्यथा क़ुर्आन शरीफ़ ने कदापि बलात् धर्म-प्रचार की शिक्षा नहीं दी।

यदि बलात् धर्म-प्रचार की शिक्षा होती तो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहचर (सहाबी) धर्म में बल प्रयोग की शिक्षा के कारण इस योग्य न होते कि कठिन परीक्षाओं के अवसर पर सच्चे ईमानदारों की भाँति हृदय की सत्यता दिखा सकते। लेकिन हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहचरों की वफ़ादारी एक ऐसा सत्य है कि उसके वर्णन करने की हमें आवश्यकता नहीं। यह बात किसी से छिपी नहीं कि उनकी सच्चाई और वफादारी के आदर्श इस श्रेणी के प्रकट हुए कि दूसरी कौमों में उसका उदाहरण मिलना कठिन है। उस वफ़ादार

क़ौम ने तलवारों के नीचे भी अपनी वफ़ादारी और सच्चाई को नहीं छोड़ा अपितु अपने प्रतिष्ठित और पवित्र नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मित्रता में वह आदर्श प्रस्तुत किया कि मनुष्य में कभी वह सच्चाई पैदा नहीं हो सकती जब तक ईमान (के प्रकाश) से उसका दिल और सीना रोशन न हो।'' (रूहानी ख़ज़ायन भाग-15, मसीह हिन्दुस्तान में, पृष्ठ-11,12) इसी प्रकार आप अपनी एक काव्य रचना में लिखते हैं जिसके कुछ पद्य निम्नलिखित हैं :

तलवार के द्वारा धर्म को फैलाना हराम है

अब छोड़ दो जिहाद[1]★ का ऐ दोस्तो ख़्याल,
दीं के लिए हराम है अब जंग और किताल।[2]
अब आ गया मसीह जो दीं का इमाम है,
दीं की तमाम जंगों का अब इख़्तेताम[3] है।
अब आसमाँ से नूरे ख़ुदा का नुज़ूल है,
अब जंग और जिहाद का फ़त्वा फ़ुज़ूल है।
दुश्मन है वो ख़ुदा का जो करता है अब जिहाद,
मुनकिर्[4] नबी (स) का है जो ये रखता है एतकाद।[5]
क्यों छोड़ते हो लोगो! नबी(स) की हदीस को,
जो छोड़ता है छोड़ दो तुम उस ख़बीस को।
क्यों भूलते हो तुम "यज़उल हर्ब" की ख़बर,
क्या ये नहीं बुख़ारी में, देखो तो खोल कर।
फ़र्मा चुका है सय्यदे कौनेन[6] मुस्तफ़ा(स)
ईसा मसीह जंगों का कर देगा इल्तवा।
जब आएगा तो सुलह को वो साथ लाएगा,
जंगों के सिलसिले को वो यक्सर मिटाएगा।
पीवेंगे एक घाट पे शेर और गोसपन्द,[7]
खेलेंगे बच्चे साँपों से बे ख़ौफ़ो बे ग़ज़न्द।[8]
यानी वो वक़्त अमन का होगा, न जंग का,
भूलेंगे लोग मशग़ला तीरो तफन्ग[9] का।
ये हुक्म सुनकर भी जो लड़ाई को जाएगा,
वो काफ़िरों से सख़्त हज़ीमत[10] उठाएगा।
इक मोजिज़: के तौर से ये पेशगोई है,
काफ़ी है सोचने को अगर अहल कोई है। (शेष..)

★ 1. यहां जिहाद से अभिप्राय इस्लाम धर्म के नाम पर तलवार इत्यादि का प्रयोग करना है जो कि इस्लाम के विरुद्ध विचारधारा है।

2. लड़ाई। 3. अन्त। 4. विरोधी। 5. आस्था 6. लोक-परलोक 7. भेड़। 8. बिना नुक़सान। 9. बंदूक। 10. हार।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक - 3. 9. 2021
मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

"एक हीरा था जो हमसे जुदा हो गया"

अज़ीज़ सय्यद तालेअ अहमद शहीद के प्रकाशमान सद्गुणों का वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले दिनों हमारे एक अत्यंत प्यारे बच्चे और वाकिफ़-ए-ज़िन्दगी अज़ीज़म सय्यद तालेअ अहमद सुपुत्र सय्यद हाशिम अकबर की घाना में शहादत हुई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। 23 अगस्त तथा 24 अगस्त के बीच की रात एम.टी.ए. की तीन सदस्यों पर आधारित टीम घाना के नारदर्न रीजन में रिकार्डिंग करके कमासी आ रही थी कि रास्ते में लगभग सवा सात बजे डाकुओं की फ़ायरिंग से अज़ीज़म सय्यद तालेअ अहमद तथा उमर फ़ारूक़ साहब ज़ख़्मी हुए।

सय्यद तालेअ अहमद मोहतरमा अमतुल लतीफ़ बेगम साहिबा तथा सय्यद मीर मुहम्मद अहमद साहब के नवासे, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ीयल्लाहु अन्हु के पडनवासे और हज़रत डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ीयल्लाहु अन्हु के पड़पोते थे। हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ीयल्लाहु अन्हु अम्मा जान रज़ीयल्लाहु तआला अन्हा के छोटे भाई थे, इस सम्बंध से इनका वंश हज़रत अम्मा जान रज़ीयल्लाहु अन्हा से मिलता है और फिर हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ीयल्लाहु अन्हु के कारण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सम्बंध स्थापित होता है। मरहूम मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादिर शहीद के दामाद भी थे। ख़ुदा तआला के फ़ज़ूल से मूसी तथा तहरीक वक्फ़े नौ में शामिल थे।

इन्होंने बायोमेडिकल साईन्स में डिग्री प्राप्त करने के बाद जर्नलिज़्म में मास्टर्स किया था। 2013 में ज़िन्दगी वक़्फ़ की तथा फिर विभिन्न दफ़तरों में काम करने के बाद 2016 में एम.टी.ए. न्यूज़ में पूर्णत: स्थाई नियुक्ति हुई जहाँ इन्होंने डाक्यूमैंट्री फ़िल्में बनाईं तथा साप्ताहिक प्रोग्राम This week with Huzoor का तो इन्होंने ही आधार रखा था। अपनी स्थानीय जमाअत और फिर ख़ुददामुल अहमदिय्या

के अंतर्गत भी सेवाओं का अवसर मिला।

अज़ीज़म तालेअ को स्तर के अनुसार अपना काम पूरा करने का विशेष जोश था जिसके लिए वे किसी ख़तरे की चिंता नहीं किया करते थे। इनकी शहादत की घटना से भी यही प्रकट होता है। टमाले के ज़ोनल मिश्नरी के अनुसार इन्हें रात को यात्रा करने से सावधानी का सुझाव दिया गया था किन्तु इन्होंने समय की कमी तथा अधिक काम के कारण यही उचित समझा। जमाअत की सम्पदा तथा समय की इतनी महत्ता थी कि रास्ते में भी लैपटॉप पर अपना काम कर रहे थे कि फाद जंक्शन के निकट डाकुओं ने गाड़ी पर फ़ायरिंग कर दी। आपकी कमर पर गोली लगी और बहुत सा ख़ून बह गया। पहले पोली क्लीनिक में इनका मेडिकल ट्रीटमैन्ट हुआ फिर टमाले टीचिंग हस्पताल जाते हुए, रास्ते में घटना के लगभग साढ़े चार घन्टे बाद इनका निधन हो गया।

उमर फ़ारूक़ साहब कहते हैं कि तालेअ का सिर मेरी जाँघ पर था और वे बार बार मुझसे यही पूछते थे कि क्या हमारी इस दुर्घटना की हुज़ूर-ए-अनवर को सूचना मिल गई है। रक्त बह जाने तथा अत्यधिक कष्ट के बावजूद हस्पताल जाते हुए इन्होंने अपने साथियों को बताया कि फ़ायरिंग के समय मैंने अपना लैपटॉप तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ गाड़ी की पिछली सीटों के पीछे धकेल दी हैं, वहाँ सुरक्षित हैं उन्हें निकाल लेना। इतने ज़ख़्मी होने के बावजूद इन्हें जमाअत की सम्पत्ति तथा इतिहास की सुरक्षा की चिंता थी। उमर फ़ारूक़ साहब कहते हैं कि रास्ते में मुझे बार बार कहते कि-

Tell Huzoor that I love him and tell my family that I love them.

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि एक हीरा था जो हमसे जुदा हो गया। अल्लाह तआला जमाअत को ख़िलाफ़त के आज्ञा पालक तथा दीन को प्राथमिकता देने वाले प्रदान फ़रमाता रहे परन्तु यह हानि ऐसी है जिसने हिला कर रख दिया। वह वक़्फ़ के यथार्थ को समझने वाला तथा अपने संकल्प को जो उसने किया था, वास्तविक रंग में निभाने वाला प्यारा वजूद था। उसे देख कर मुझे आश्चर्य होता, और अब तक होता है कि इस सांसारिक वातावरण में पालन पोषण पाने वाले बच्चे ने अपने वक़्फ़ को समझा, उसे निभाया और फिर उसे अन्तिम सीमा तक पहुंचा दिया। वह बुज़ुर्गों की घटनाओं को पढ़ता था, इसलिए नहीं कि इतिहास से अवगत हो और उनकी क़ुर्बानियों पर आश्चर्य करे बल्कि इसलिए ताकि उन्हें जीवन का अंश बनाए। ख़िलाफ़त से वफ़ा तथा निष्ठा की ऐसी समझ थी कि कम ही देखने मिलती है, दीन का गहरा ज्ञान रखने वाले भी नहीं करते। उसने ख़िलाफ़त से वफ़ा तथा ऐसा आज्ञा पालन किया कि अपने अन्तिम शब्दों में जबकि वह जीवन मृत्यु के बीच था उसे ख़लीफ़-ए-वक़्त से प्यार तथा वफ़ा का ही ध्यान था। अपने बच्चों तथा अपनी फ़ैमिली का सबको ध्यान आता है किन्तु हर पल, बार बार अपने बच्चों से परिवार से पहले अथवा साथ साथ ख़लीफ़-ए-वक़्त से प्यार की अभिव्यक्ति का शायद ही किसी को ध्यान आता हो। शायद दो तीन साल पहले उसने ख़िलाफ़त से सम्बंध तथा प्रेम की अभिव्यक्ति पर आधारित एक कविता

लिखी थी, जो उसने अपने एक दोस्त को दी और कहा कि अपने पास रख लो और किसी को दिखानी नहीं है। उस कविता का आरम्भ इस प्रकार किया है कि मैं ख़लीफ़-ए-वक़्त से सर्वाधिक प्यार करता हूँ तथा समापन इस प्रकार किया है कि ख़लीफ़-ए-वक़्त से मुझे जो प्यार और मुहब्बत है वह उन्हें कभी पता नहीं चलेगी। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हे प्यारे तालेअ! तुम्हारे इन अन्तिम शब्दों से पहले भी मुझे पता था, तुम्हारे प्रत्येक कर्म से, हर एक अमल एवं क्रिया से, तुम्हारी आँखों की चमक तथा चेहरे की एक अनोखी आभा से, उस मुहब्बत की अभिव्यक्ति होती थी, मुझे शायद ही किसी में इस मुहब्बत की अभिव्यक्ति दिखाई देती हो।

उसे अपने काम से लगाव था तो केवल इस लिए ताकि उसके द्वारा इस्लाम तथा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन की रक्षा कर सके। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. को दफ़नाते समय मेरी दाईं ओर आकर खड़ा हो गया, मैं नहीं जानता था कि यह कौन खड़ा है। उस अवसर पर उस तेरह साल के लड़के ने शायद यह एहद कर लिया था कि मैंने ख़लीफ़-ए-वक़्त का सहायक बनना है। उसने अपनी शिक्षा पूरी की तथा वर्षों के बाद इस संकल्प को निभाया और ख़ूब निभाया तथा शहीद होकर बता गया कि मैं ख़िलाफ़त का वास्तविक सहायक हूँ।

ऐ प्यारे तालेअ! मैं गवाही देता हूँ कि नि:सन्देह तुमने अपने वक्फ़ और एहद के उच्चतम स्तरों को प्राप्त कर लिया। वह ख़लीफ़-ए-वक़्त के शब्दों के अनुसार अमल करने के लिए कैसे कैसे प्रयास करता था, इसका अनुमान इससे होता है कि मुरब्बियों से कुछ मीटिंगज़ में मैंने कहा था कि मुरब्बियों को लगभग एक घन्टा तहज्जुद पढ़ने का प्रयास करना चाहिए। अज़ीज़ तालेअ ने इसके अनुसार अमल करने की कोशिश शुरु कर दी।

वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वंशज होने की दृष्टि से इस वंश के लोगों के लिए भी वफ़ा एवं श्रद्धा का एक उदाहरण स्थापित कर गया। वह वाक्फ़ीन-ए-ज़िन्दगी के लिए भी आश्चर्य जनक नमूना था। उसने आर्थिक तंगी अथवा एलाउंस कम होने का कभी शिकवा नहीं किया। वह ख़ुदा से यही दुआ करता कि ऐ अल्लाह! मुझे तंगी न देना। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि मैं उसकी वफ़ा को तो कुछ हद तक जानता था परन्तु उसकी नेकी तथा तक्वा के स्तर अत्यंत उच्च थे।

आमिर सफ़ीर साहब कहते हैं कि मैंने अपनी आँखों से देखा है कि तालेअ बहुत सी प्रतिभाओं के मालिक थे, वे किसी योजना पर शून्य से कार्य आरम्भ करते तथा उसे अद्भुत चीज़ बना देते। क़ुद्दूस आरिफ़ साहब सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया यू.के. कहते हैं कि मेरा बचपन से उसके साथ सम्बंध था, उसने हज़रत मलिक ग़ुलाम फ़रीद साहब की शॉर्ट कमैन्ट्री तथा फ़ाईव वॉलुयम कमैन्ट्री बड़े विस्तार से पढ़ी हुई थी। पतनी सतवत साहिबा कहती हैं कि आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इतनी अधिक मुहब्बत थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वर्णन पर बच्चों की भांति रोते थे। बेटे तलाल को आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कहानियाँ सुनाते तो हिचकियाँ लेकर रोते। बेटा ईसाई स्कूल

में पढ़ता था तो उसे स्कूल ले जाते हुए सूर: इख़लास दोहरवाते हुए जाते थे। कभी यह विचार आता कि ख़लीफ़-ए-वक़्त को कोई बात अच्छी नहीं लगी है तो तहज्जुद में बिलक बिलक कर अल्लाह तआला से माफ़ियाँ मांगा करते थे। अल्लाह तआला पर अत्यधिक भरोसा था तथा ख़ुदा तआला उनकी आवश्यकताएँ पूरी करता था।

शहीद के वालिद लिखते हैं कि अलहम्दुल्लिाह, ख़ुदा तआला ने हमारे बेटे को शहादत के लिए चुन लिया, उसकी रूह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में चौदह सौ साल पहले मक्का और मदीना की गलियों में फिरती थी तथा उसका शरीर साक्षात स्नेह था। शहीद मरहूम की वालिदा कहती हैं कि बेटे के निधन के बाद मुझे इस बात का अधिक आभास हुआ कि उसे आपसे कितनी मुहब्बत थी। मरहूम की बहन नुदरत साहिबा कहती हैं कि तालेअ का दीनी ज्ञान अत्यधिक विस्तृत था, हदीसों का गहन अध्ययन था, अरबी भाषा तथा उसकी व्याकरण पर पकड़ बनाने का प्रयास करता। उसने बुद्धि की समस्त क्षमताओं को ख़ुदा की निकटता तथा जमाअत की सेवा के लिए उपयोग किया। तालेअ ने शहादत के विषय में सपना भी देखा था कि उसने ख़ुद्दामुल अहमदिया के कपड़े पहने हुए हैं तथा झंडा उठाए हुए जन्नत में दाखिल हो रहा है तथा हर कोई उसे उसके ससुर के नाम से पुकार रहा है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर आ गया। उनकी छोटी बहिन कहती हैं कि अति उत्तम रोल मॉडल थे। दफ़तर आते जाते सदैव हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. के दर्स-ए-क़ुर्आन सुनते रहते। आबिद वहीद साहब कहते हैं कि अकसर मैंने डाक्यूमैन्ट्री फ़िल्मों की तय्यारी के समय उसे अट्ठारह उन्नीस घन्टे काम करते देखा है। मिर्ज़ा तलहा अहमद साहब कहते हैं कि तालेअ को स्क्रप्ट राईटिंग तथा स्टोरी टैलिंग में निपुणता थी। नसीम बाजवा साहब कहते हैं कि मैंने मुबल्लिग़ के रूप में उसे बच्चे के रूप में देखा, वह समय का पाबन्द, गंभीर, बुद्धिमान, दीन के ज्ञान का शौक़ रखने वाला, आज्ञा पालक, मेहमान नवाज़, अल्लाह की स्तुति करने वाला, बड़ों का सम्मान तथा चिंतन मनन करने वाला था। मुरब्बी सिलसिला नौशेरवान रशीद साहब कहते हैं कि मैंने तालेअ भाई को तीन साल की अवधि में नियमानुसार जुमेरात का रोज़ा रखते देखा है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि तालेअ शहीद ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शारीरिक तथा आध्यात्मिक संतान हाने का हक़ अदा कर दिया। वह आँहूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वंश में से था और अल्लाह तआला ने उसे मुहर्रम के महीने में क़ुर्बानी के लिए चुना। आशा है अल्लाह तआला ने उसे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों के नीचे जगह दी होगी। किसी ने सपने में देखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक स्थान पर खड़े हैं और तालेअ दौड़ता हुआ जाकर आप स. से चिमट जाता है, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उसे चिमटा कर कहते हैं कि आओ मेरे बेटे सुस्वागतम।

☆ ☆ ☆

ज़िक्रे इलाही (अर्थात अल्लाह को याद करने और उसका नाम जपने) के बारे में हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़िअल्लाहु अन्हु के निर्देश

हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़िअल्लाहु अन्हु जलसा सालाना 28 दिसंबर 1916 ई. के अपने भाषण में (जो **ज़िक्रे इलाही** के नाम से पुस्तक के रूप में उपलब्ध है) अल्लाह को याद करने के विभिन्न तरीकों और उसकी मुहब्बत प्राप्त करने के बारे में फ़रमाते हैं:-

वास्तविक ज़िक्रुल्लाह चार हैं:

और जो वास्तव में ज़िक्रुल्लाह हैं और जिनका क़ुरआन में बड़े ज़ोर से आदेश दिया गया है, वह ज़िक्र और हैं और वे चार तरह के हैं। उनका छोड़ना बहुत बड़े सवाब से वंचित रहना है इसलिए उन्हें कभी छोड़ना नहीं चाहिए उनमें से पहला ज़िक्र नमाज़ है (2) क़ुरआन का पढ़ना (3) अल्लाह तआला की विशेषताओं का वर्णन बार-बार करना और उन का विवरण अपनी ज़बान से करना (4) जिस तरह अल्लाह तआला के गुणों को अलग और अकेले में वर्णन करना इसी तरह लोगों में भी व्यक्त करना।

ये वे चार ज़क्रि हैं जो क़ुरआन से साबित हैं और जिनका करना रूहानियत के लिए निहायत ज़रूरी बल्कि अनिवार्य है।

अब मैं इस बात का सबूत देता हूँ कि इन ज़िक्रों को क़ुरआन करीम ने पेश किया है। नमाज़ से संबंधित अल्लाह तआला फरमाता है-

اِنَّنِیۡۤ اَنَا اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعۡبُدۡنِیۡ ۙ وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِکۡرِیۡ

(सूर: ताहा: 15)

हे मनुष्य मैं ही तेरा ख़ुदा हूं और मेरे सिवा तेरा कोई ख़ुदा नहीं। अत: मेरी ही इबादत कर और मेरे ही ज़िक्र के लिए नमाज़ को कायम कर। इस आयत से मालूम हुआ कि जहां अल्लाह तआला ने फरमाया है कि हे मोमिनो! मेरा ज़िक्र करो तो इसके अर्थ यह हुए कि हे ईमान लानेवालो! नमाज़ पढ़ो। फिर फरमाता है-

فَاِنۡ خِفۡتُمۡ فَرِجَالًا اَوۡ رُکۡبَانًا ۚ فَاِذَاۤ اَمِنۡتُمۡ فَاذۡکُرُوا اللّٰہَ کَمَا عَلَّمَکُمۡ مَّا لَمۡ تَکُوۡنُوۡا تَعۡلَمُوۡنَ

(अलबक़र:- 240)

नमाज़ पढ़ने की ताकीद करने के बाद कहता है कि अगर तुम्हें दुश्मनों से किसी प्रकार का भय है तो चाहे पैदल या घोड़े पर सवार हो उसी हालत में नमाज़ पढ़ लो और जब तुम शांति में हो तो अल्लाह तआला का ज़िक्र इसी तरह करो जिस तरह उस ने सिखाया है और जिसे तुम पहले नहीं जानते थे इस आयत में नमाज़ का नाम ज़िक्रुल्लाह रखा है इसके बारे में और भी आयतें हैं। लेकिन इस समय में इन्हीं पर बस करता हूं। दूसरा ज़िक्र क़ुरआन है। इसका सबूत यह है कि अल्लाह तआला फरमाता है

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अलहिजर: 10)

कि हम ने ही यह ज़िक्र उतारा है और हम ही इसके रक्षक हैं। क़ुरआन के नाज़लि करने को ज़िक्र का

उतारना करार दिया है। इससे मालूम हो गया कि जहां अल्लाह तआला ने यह आदेश दिया है कि उज़कुरुल्लाह तो इस के एक यह अर्थ भी हैं कि क़ुरआन पढ़ा करो। फिर अल्लाह तआला फरमाता है-

وَ هٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ (अल् अंबिया: 51)

इस आयत में भी क़ुरआन करीम को पेश करके फरमाया है कि हम ने तुम्हारे लिए यह ज़िक्र नाज़लि किया है क्या फिर भी तुम इसका इन्कार करते हो।

तीसरा ज़िक्र अल्लाह तआला के गुणों को बार बार दुहराना और उनका स्वीकार करना है। अब मैं इसका सबूत क़ुरआन से देता हूँ। कुछ लोगों का मानना है कि नमाज़ में जो अल्लाह तआला के गुणों का वर्णन किया जाता है वही पर्याप्त है। लेकिन यह ग़लत है नमाज़ के अतिरिक्त भी ज़िक्रे इलाही होता है और इसका सबूत क़ुरआन से मिलता है। ख़ुदा तआला फरमाता है-

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِكُمْ (अन्निसा: 104)

जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो अल्लाह तआला का ज़िक्र करो। खड़े होने की स्थिति में भी बैठने की स्थिति में भी और लेटे होने की स्थिति में भी।

इससे मालूम होता है कि ज़िक्र नमाज़ के अतिरिक्त है क्योंकि नमाज़ में ही अगर अल्लाह तआला के गुणों का वर्णन करना पर्याप्त होता तो अल्लाह तआला यह क्यों फरमाता

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِكُمْ

(अन्निसा: 104) कि जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो फिर अल्लाह तआला को याद करो। खड़े होकर, बैठकर, लेटकर कर। फिर फरमाता है-

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّ لَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَ الْاَبْصَارُ (अन्नूर: 38)

इस आयत में अल्लाह तआला फरमाता है कि ऐसे लोग मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथी हैं कि उन्हें ख़रीद तथा बिक्री अल्लाह तआला के ज़िक्र और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने से नहीं रोकती क्योंकि वे उस दिन से डरते हैं जबकि आँखें और दिल पलट जाएंगे। यहाँ नमाज़ के अतिरिक्त एक ज़िक्रुल्लाह का वर्णन किया है।

चौथा ज़िक्र यह फरमाता है कि अल्लाह तआला के गुण को एलान के साथ लोगों के सामने बयान किया जाए। इस का सबूत है -

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَاَنْذِرْ وَ رَبَّكَ فَكَبِّرْ وَ ثِيَابَكَ فَطَهِّرْ وَ الرُّجْزَ فَاهْجُرْ وَ لَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ وَ لِرَبِّكَ فَاصْبِرْ (अल्मुदस्सिर 2-8)

इन आयतों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आदेश दिया गया है कि खड़ा हो और सभी लोगों को डरा। और अपने रब्ब की प्रशंसा बयान कर। इसमें यह बताया गया है कि अल्लाह तआला की बड़ाई लोगों के सामने बयान करना चाहिए। यह तो हुए वे ज़िक्र जिन के करने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है।

ज़िक्र की दो और किस्में:

अब सवाल यह रह जाता है कि उनके करने के तरीके क्या हैं। इस से संबंधित याद रखना चाहिए कि इन ज़िक्रों की दो किस्में हैं। एक फर्ज़ दूसरे नफ्ल। यहाँ फर्ज़ों के बारे में कुछ बताने की ज़रूरत नहीं क्योंकि ख़ुदा की कृपा से हमारी जमाअत के लोग फर्ज़ों को तो अदा करते हैं बाक़ी रहे नफ्ल उनके बारे में कुछ बताने की ज़रूरत है। लेकिन चूंकि यह विषय लंबा है फिलहाल मैं इसे छोड़ता हूँ और यह बताता हूँ कि क़ुरआन कैसे पढ़ना चाहिए। इसके बारे में याद रखना चाहिए कि इंसान रोज़ पढ़ने के लिए क़ुरआन का एक हिस्सा निर्धारित कर ले कि इतना हर दिन पढ़ा करूँगा। यह नहीं होना चाहिए कि कभी क़ुरआन उठाया और कुछ पढ़ लिया। बल्कि नियमित और निर्धारित अनुमान से पढ़ना चाहिए। बिना नियम के पढ़ने अर्थात कभी पढ़ा और कभी न पढ़ा कुछ लाभ नहीं होता। अत: क़ुरआन से संबंधित चाहिए कि इसका एक हिस्सा निर्धारित कर लिया जाए और उस को हर दिन पूरा किया जाए वह भाग चाहे एक पारा हो या आधा दो या तीन या चार पारे हों। उसको रोज़ पढ़ा जाए और उसे पूरा करने में कोताही न की जाए। रसूल करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं कि अल्लाह तआला को सब से अधिक वह इबादत पसंद है कि जिस पर मनुष्य निरन्तरता अपनाए और जिसमें नाग़ा न होने दे। (मिश्कात किताबुल ईमान) क्योंकि नाग़ा करने से मालूम होता है कि उसे शौक नहीं है और शौक और दिली मुहब्बत के बिना हृदय की सफाई नहीं होती।

मैंने देखा है कि जब कभी किसी विषय में लीन होने या किसी और कारण से क़ुरआन न पढ़ा जाए तो दिल बेचैनी महसूस करता और दूसरी इबादतों में भी इसका असर महसूस होता है। (मिश्कात किताबुल ईमान) प्रथम तो क़ुरआन रोज़ पढ़ना चाहिए। द्वित्तीय चाहिए कि क़ुरआन को समझ कर पढ़ा जाए और इतनी जल्दी जल्दी न पढ़ा जाए कि मतलब ही समझ में न आए "तरतील" के साथ पढ़ना चाहिए ताकि अर्थ भी समझ में आए और क़ुरआन करीम का सम्मान भी ध्यान में रहे। तृतीय जहां तक हो सके क़ुरआन पढ़ने से पहले वज़ू किया जाए यद्यपि मेरे निकट वुज़ू के बिना पढ़ना भी वैध है। हाँ कुछ उल्मा ने वुज़ू के बिना तिलावत क़ुरआन को नापसंद किया है। मेरे निकट इस तरह पढ़ना नाजाईज़ नहीं लेकिन उचित यही है कि असर और सवाब अधिक पाने हेतु वज़ू कर लिया जाए।

एक दोस्त पूछते हैं कि अगर क़ुरआन समझ में न आए तो क्या किया जाए। ऐसे लोगों को चाहिए कि क़ुरआन का अनुवाद पढ़ने की कोशिश करें। लेकिन अगर पूरा अनुवाद न आता हो तो इस तरह करना चाहिए कि कुछ क़ुरआन का अनुवाद सीख लिया जाए और जब रोज़ मंज़िल (एक निर्धारित भाग) पढ़ें तो साथ ही उस भाग को भी पढ़ लें जिसका अनुवाद जानते हों। कोई कहे कि फिर मंज़िल पढ़ने का क्या लाभ जबकि इसका अर्थ समझ में नहीं आता। इस से संबंधित यह याद रखना चाहिए कि जब कोई काम नेक नीयत और श्रद्धा से किया जाता है तो अल्लाह तआला उस ईमानदारी और इरादे को देखकर ही उसे इनाम दे देगा और यह बात भी उचित है कि शब्दों का भी असर होता है। देखिए रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने आदेश दिया है कि जब बच्चा पैदा हो तो उसके कान में अज़ान कही जाए। हालांकि उस समय बच्चा बिल्कुल कुछ जानने समझने से असमर्थ होता। लेकिन "दाशता आयद बकार" के अनुसार उस का प्रभाव ज़रूर होता है।

अन्य ज़िक्र:

क़ुरआन की तिलावत के अतिरिक्त अन्य ज़िक्र, तस्बीह और तहमीद जिन्हें इंसान अकेला बैठकर करे या मज्लिसों में। इस ज़िक्र की भी एक किस्म फर्ज़ है जैसा कि जानवर ज़िब्ह करते समय तकबीर पढ़ना अगर उस समय तकबीर नहीं पढ़ी जाएगी तो जानवर हराम होगा और दूसरी किस्म नफिल है जो दूसरे समय में विर्द (जाप) की शक्ल में पढ़ी जाती है और उनको रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने बहुत पढ़ने को कहा है। अर्थात आप ने हर अवसर पर अल्लाह तआला का ज़िक्र रखा है जैसे जब भोजन करने बैठ तो बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ लो। इस का मतलब यह नहीं कि अगर कोई नहीं पढ़ेगा तो उसका पेट नहीं भरेगा। बल्कि यह है कि जिस उद्देश्य के लिए खाना खाया जाता है वह इस तरह पूरे रूप में प्राप्त होगा अर्थात रूहानियत को इससे बहुत लाभ पहुंचेगा। फिर हर काम शुरू करने के समय बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ने का आदेश है ताकि काम में बरकत हो और जब इसे ख़त्म कर लिया जाए। तो अल्हम्दो लिल्लाह रब्बलिआलमीन पढ़ा जाए। ताकि काम में बरकत हो। इसी तरह अगर कोई नया कपड़ा पहने या कोई और नई चीज़ उपयोग करे तो अल्हम्दो लिल्लाह कहकर उसका शुक्रिया अदा करे। हर दुःख और मुसीबत के समय اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजेऊन पढ़ना चाहिए। अगर कोई बात अपनी ताकत और हिम्मत से बड़ी पेश आए तो لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ (ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह) कहना चाहिए।

अतः ये ज़िक्र इन बातों के बारे में हैं जो दैनिक पेश आते रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को दिल में या ख़ुशी होगी या दुख तो अगर ख़ुशी हो तो اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ कहे और यदि दुःख हो तो اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ पढ़े। अल्लाह तआला फरमाता है فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ और आँ हज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने हर हालत से संबंधित ज़िक्र निर्धारित कर दिए हैं इसलिए उनके लिए मनुष्य हर हालत में अल्लाह तआला के ज़िक्र में संलग्न रहता है जैसे एक व्यक्ति जो दफतर में बैठा काम कर रहा हो वह अगर अपने बारे में कोई सुसमाचार सुने तो अल्हम्दो लिल्लाह कहे। अगर चलते हुए यह ख़ुशी की बात मालूम हो तो भी अल्हम्दो लिल्लाह कहे। अगर लेटे हुए ख़ुशी की बात सुने तो उसी हालत में अल्हम्दो लिल्लाह। इस तरह अपने आप قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ अल्लाह तआला का ज़िक्र होता रहेगा। फिर रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं कि اَفْضَلُ الذِّكْرِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (तिर्मिज़ी किताबुल दावात) जाबिर से तिर्मिज़ी में रिवायत है कि सबसे बेहतर और उत्तम ज़िक्र यह है कि इस बात को स्वीकार किया जाए कि अल्लाह तआला के सिवा कोई उपास्य नहीं है। शेष ज़िक्रों की भी विभिन्न फज़ीलतें हैं। इसलिए आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ के बारे में फरमाया है - كَلِمَتَانِ خَفِيْفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيلَتَانِ فِي الْمِيزَانِ حَبِيْبَتَانِ اِلَى الرَّحْمٰنِ

(बुख़ारी किताबुल तौहीद)

कि दो बातें ऐसी हैं कि जो ज़बान से कहने में छोटी हैं, लेकिन जब क़यामत के दिन वज़न की जाएंगी

तो उनका इतना वज़न होगा कि उनकी वजह से नेकी का पलड़ा भारी हो जाएगा और वह अल्लाह तआला को बहुत ही पसंद हैं। यह भी बहुत उच्च स्तर का ज़िक्र है। यहां तक कि एक बार जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बीमारी की अधिकता के कारण सफर में तहज्जुद के लिए उठे और बेहोश होकर गिर गए और नमाज़ न पढ़ सके तो इल्हाम हुआ कि ऐसी स्थिति में तहज्जुद के स्थान पर लेटे लेटे यही पढ़ लिया करो। तो यह भी बहुत सवाब वाला ज़िक्र है। हदीसों में आता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अक्सर इसे पढ़ते थे।

इन दो ज़क्रिों को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बेहतर बताया। मगर एक और ज़िक्र भी बेहतर ज़िक्र है यद्यपि उस से संबंधित रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई उपदेश नहीं मिलता। लेकिन अक्ल बताती है कि वह भी बहुत उच्च स्तर का है और वह क़ुरआन की आयतों का ज़िक्र है। अगर उन्हें ज़िक्र के रूप में पढ़ा जाए तो दुगना इनाम मिलेगा। एक तिलावत का और दूसरा ज़िक्र का। यह दो मैंने ज़िक्र बतलाए। अब उन से संबंधित सावधानियां बताता हूं।

ज़िक्र करने से संबंधित सावधानियां:

पहली सावधानी यह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि कभी इतना ज़िक्र न करो कि दिल दुखी हो (2) ऐसे समय में ज़िक्र नहीं करना चाहिए जबकि दिल संतुष्ट न हो। जैसे एक आवश्यक काम करना है तब कोई अगर ज़िक्र करने के लिए बैठ जाए तो ध्यान ज़िक्र की ओर न होगा और इस तरह अल्लाह तआला के कलाम का अपमान होगा।और इंसान गुनाहगार ठहरेगा। तो ज़िक्र करने के लिए पहली सावधानी इस तरह करनी चाहिए कि ज़िक्र में इतना लंबा समय न करे कि दिल दुखी हो जाए और दूसरा यह कि ऐसे समय में ज़िक्र के लिए न बैठे जबकि दिल किसी और विचार में लगा हो और बजाए इनाम पाने के गुनाहगार ठहरे। बल्कि संक्षेप के साथ और ध्यान केन्द्रित होने के समय करे। एक बार रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) घर में आए तो हज़रत आयशा एक महिला से बातें कर रही थी। आपने फ़रमाया क्या कह रही हो। हज़रत आयशा ने कहा यह सुना रही है कि मैं इतनी इबादत करती हूँ और इस तरह करती हूँ आप ने यह सुन कर फरमाया यह कोई ख़ुशी की बात नहीं है कि इतनी अधिक इबादत की जाए। अल्लाह तआला उसी इबादत को पसंद करता है जिस पर निरन्तरता धारण की जा सके। (मिशक़ात किताबुल ईमान) अल्लाह तआला अधिक इबादत से दुखी नहीं होता बल्कि बंदा ख़ुद दुखी हो जाता है और जब दुखी हो जाता है तो फिर इस की इबादत किसी काम की नहीं रहती। अत: अगर कोई अत्याधिक बढ़ता है तो उस पर मुसीबत पड़ जाती है। अब्दुल्लाह पुत्र अमर पुत्र आस के संबंध में आया है कि वह एक शक्तिशाली इंसान थे सारी रात नमाज़ पढ़ते और दिन में रोज़े रखते और सारे क़ुरआन करीम की तिलावत एक दिन में करते। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया कि यह जायज़ नहीं है। रात का छठा, तीसरा या अधिकतम आधा भाग नमाज़ पढ़नी चाहिए और रोज़ा अधिकतम एक दिन रखना चाहिए और एक दिन इफ्तार करना चाहिए और क़ुरआन तीन दिन से कम समय में समाप्त नहीं करना चाहिए। (बुख़ारी किताबुस्सौम) इसके बारे में अब्दुल्ला बिन अम्र बिन आस ने बहुत कोशिश की कि इससे अधिक के लिए

अनुमति मिल जाए लेकिन आप ने अनुमति नहीं दी। वह इसी पर अनुकरण करते रहे। लेकिन जब बूढ़े हो गए। तो बहुत दुख जताते कि मैंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वादा तो कर लिया लेकिन अब नहीं कर सकता। तो अत्यधिक बढ़ना कठिनाइयों में डाल देता है। ज़िक्र भी एक बहुत अच्छी चीज़ है मगर देखो जिस तरह पुलाओ अधिक खा लिया जाए तो वह अपच कर देता है इसी तरह ज़िक्र में अत्यधिक बढ़ना भी नफ्स पर ऐसा बोझ हो जाता है कि वह ज़िक्र से भागने वाला हो जाता है। अत: धीरे धीरे स्वयं पर बोझ डालना चाहिए और इतना डालना चाहिए जो सहन कर सके।

तीसरी सावधानी यह करनी चाहिए कि शुरुआत में अगर तबीयत ज़िक्र की तरफ आकर्षित न हो। तो भी दिल को मज़बूत करके मनुष्य करता रहे और दृढ़ता से इरादा कर ले कि ज़रूर पूरा करूँगा और नीयत कर ले कि शैतान कितना ही ज़ोर लगाए इस बात को हरगिज़-हरगिज़ नहीं मानूंगा। अगर इंसान इस तरह इरादा कर ले तो ज़रूर तबीयत को मनवा लेता है। कहते हैं राय टेकेन एक मशहूर वकील था। उसके मुक़ाबले में एक और वकील आया। उसने यह चालाकी की कि जज से बातें करते करते कह दिया कि राए टेकेन का दावा है कि चाहे कोई जज कितना ही सावधान रहे में उससे मनवा लेता हूं। यह सुनकर मजिस्ट्रेट ने इरादा किया कि राय टेकेन जो कुछ कहेगा मैं कभी नहीं मानूंगा। अत: जब मुकदमा पेश हुआ तो जो बात राय टेकेन पेश करे। मजिस्ट्रेट उससे इंकार कर दे और आख़रिकार दूसरे वकील के पक्ष में ही निर्णय दिया। तो जब व्यक्ति इस बात का इरादा कर लेता है कि मैं अमुक का प्रभाव कभी नहीं स्वीकार करूंगा तो वह उस पर नियंत्रण नहीं पा सकता। अत: प्रारंभिक अवस्था में ज़िक्र करने के समय ऐसी ही स्थिति बनानी चाहिए।

चौथी सावधानी यह है कि ज़िक्र करते समय किसी कष्ट की स्थिति में नहीं होना चाहिए जैसे फर्श पर बैठे हुए कोई चीज़ चुभती हो या और इसी प्रकार की कोई असुविधा हो उसे दूर करके ज़िक्र में मग्न होना चाहिए।

पांचवीं यह कि ऐसी स्थिति बनानी चाहिए कि मझे जो कुछ प्राप्त होगा उसे स्वीकार कर लूंगा। अगर शुरुआत में उदासीन हो। तो भी किसी न किसी समय ज़िक्र तबीयत में दाख़िल हो जाएगा।

छठी यह कि ज़िक्र विनय और विनम्रता से किया जाए। अगर विनय पैदा न हो। तो ऐसी सूरत बना ले कि जिस से विनय प्रकट होता है। क्योंकि कुछ बातें जो शुरुआत में कृत्रिम रूप से धारण की जाती हैं धीरे धीरे इसी तरह हो जाती हैं। अत: जब कोई विनय धारण करने की कोशिश करता और रोने की शैली बनाता है तो नतीजा यह होता है कि एक समय में विनय पैदा होता है। एक प्रोफेसर से के बारे में लिखा है कि वह बड़ा ही नरम दिल था लेकिन बाद में बड़ा कठोर दिल हो गया। उस का कारण यह हुआ कि एक दिन जो नरमी के कारण उसे कष्ट हुआ तो उसने इरादा किया कि अब सख्त हो जाउंगा। इसके लिए उसने सख्ती वाली शक्ल बना ली यद्यपि दिल में वही नरमी थी। लेकिन ज़ाहिरी तौर पर सख्त और कठोर मालूम होता था होते-होते यह हुआ कि दिल भी सख्त हो गया। वह प्रोफेसर यद्यपि अपनी आदत को बुराई की ओर ले गया मगर तुम लोग अगर नेकी की ओर जाने के लिए इस तरह करोगे तो धीरे-धीरे वास्तव में तुम्हारे अंदर विनम्रता उत्पन्न हो जाएगी। और अगर एक दिन एक सैकंड के लिए भी वास्तिवक विनम्रता पैदा हो जाएगी तो दूसरे दिन अधिक समय के लिए उत्पन्न हो सकेगी। तो अगर यह कोशिश करोगे तो ज़रूर सफल हो जाओगे।

ज़िक्र करने के समय:

अब जबकि यह सिद्ध हो गया कि ज़िक्र बहुत आवश्यक है जैसा कि मैंने बताया है कि अल्लाह तआला फरमाता है- فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِكُمْ (अन्निसा: 104) यह पता होना चाहिए कि किस-किस समय ज़िक्र करना चाहिए। यूं तो हर समय ही अल्लाह तआला का ज़िक्र करना चाहिए। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में आयशा सिद्दीक़ा फरमाती हैं كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ يَذْكُرُ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ اَحْيَانِهٖ (तिर्मिज़ी) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर समय ही अल्लाह तआला का ज़िक्र करते थे। लेकिन कुछ समय क़ुरआन में अल्लाह तआला ने वर्णन फरमाए हैं और वे हैं-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا وَّ سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا

(अल्-अहज़ाब: 42-43) याद करो अल्लाह को "बुकरह" और "असील" के समय। ये दोनों समय बहुत उच्च स्तर के है। बुकरह अरबी में पौ फटने से सूरज निकलने तक को कहते हैं। इस दृष्टि से यह अर्थ हुए कि सुबह की नमाज़ से लेकर सूरज निकलने तक ज़िक्र करो। एक समय यह हुआ और दूसरा समय असील है। शब्दकोष से मालूम होता है कि "असील" असर से लेकर सूरज के डूबने तक को कहते हैं। तीसरा चौथा और पांचवा समय जो इस आयत में वर्णन हुआ है -

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ قَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَ مِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَ اَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى (ताहा: 131)

अर्थात सब्र कर उन बातों पर जो ये लोग कहते हैं और तस्बीह और तहमीद कर अपने रब्ब की सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले (इन दोनों समयों का ज़िक्र पहले आ चुका है) और रात के समय में और इन की दोनों तरफों में ताकि तेरी इच्छा पूरी हो। इस आयत में के पहले दो समयों के अर्थात सूरज निकलने के बाद का समय और रात का पहला और पिछला समय ज़िक्र के लिए उपयोगी बताया गया है।

छठा समय प्रत्येक नमाज़ पढ़ने के बाद है। रसूल करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) इस ज़िक्र को हमेशा जारी रखते थे मानो सुन्नत हो गई थी। इब्ने अब्बास कहते हैं कि जब हम दूर होते थे तो -

اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

से पता करते थे कि नमाज़ समाप्त हो गई है। अत: नमाज़ के बाद पढ़ने के लिए एक ज़िक्र तो यह है कि- اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ पढ़ा जाए। दूसरे यह कि सुबहान अल्लाह ِऔर अल हमदु लिल्लाह तैंतीस-तैंतीस बार पढ़ा जाए और अल्लाहो अकबर चौंतीस बार पढ़ा जाए (तिर्मिज़ी किताबुल दावात) यह ज़िक्र कई तरीके पर रिवायत है। लेकिन सबसे उचित तरीका यही है अलग अलग पहले दोनों वाक्य को तैंतीस-तैंतीस बार कहे और तीसरे को चौंतीस बार। नमाज़ के बाद का समय ज़िक्र के लिए बहुत ही उच्च दर्जा का है उस समय ज़रूर ज़िक्र करना चाहिए। कुछ लोग मुझे और हज़रत मौलवी साहिब ख़लीफतुल मसीह अव्वल और हज़रत मसीह मौऊद[अ.] को देखकर शायद समझते हों

कि यह नमाज़ के बाद ज़िक्र नहीं करते। उन्हें पता होना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल भी ज़िक्र किया करते थे और मैं भी करता हूँ, हाँ ज़ोर से न वे करते थे और न मैं। मैं दिल में करता हूँ। अत: नमाज़ के बाद ज़रूर ज़िक्र करना चाहिए।

ज़िक्र से संबंधित कुछ अन्य सावधानियां भी हैं और वह यह कि सिवाय उन मौकों के जो हदीस से प्रमाणित हैं मज्लिस में ज़ोर से ज़िक्र न किया जाए। कई बार इस तरह अहंकार पैदा हो जाता है। कई बार अन्य लोगों को ज़िक्र करने या नमाज़ पढ़ने में तकलीफ होती है। फिर भी याद रखना चाहिए कि जो बात नई धारण की जाए वह बोझिल मालूम होती है और इसके करने से दिल घबराता है यही कारण है कि कुछ लोग कहते हैं कि ज़िक्र में दिल नहीं लगता। लेकिन क्या एक ही दिन में कोई व्यक्ति किसी कला में पूर्ण हो जाता है? हरगिज़ नहीं बल्कि धीरे धीरे और कुछ अवधि के बाद ऐसा होता है। अत: अगर शुरुआत में किसी का दिल न लगे और उसे बोझ सा मालूम हो तो वह घबराए नहीं। धीरे धीरे दिल स्वीकार कर लेगा लेकिन शर्त यह है कि ज़िक्र को बनाए रखा जाए। फिर कुछ लोग कहते हैं कि हमें ज़िक्र करने में आनन्द भी आ जाता है मगर उन्हें चाहिए कि नफ्स के लिए आनन्द तलाश करें और ज़िक्र करने के समय यह इरादा न हो कि सुख प्राप्त हो बल्कि इबादत समझ कर करना चाहिए। क्योंकि आनंद मूल चीज़ नहीं है मूल चीज़ इबादत है और इबादत तभी स्वीकार होती है जबकि इबादत समझ कर की जाए।फिर कुछ लोग कहते हैं कि हमें ज़िक्र करने के लिए कुछ दिन तो कब्ज़ रहती है और कुछ दिन तबीयत खुल जाती ऐसे लोगों को भी घबराना नहीं चाहिए। कब्ज़ सभी प्रकार के लोगों को होती है। एक बार एक सहाबी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आकर कहा कि हुज़ूर मैं मुनाफ़िक़ हूँ। आप ने फरमाया नहीं तुम तो मुसलमान हो। उस ने कहा हुज़ूर जब आप के सामने आता हूँ तो जन्नत और जहन्नम मेरी आँखों के सामने आ जाते हैं और जब घर जाता हूं तो फिर वह स्थिति स्थिर नहीं रहती। आप ने फरमाया अगर वही स्थिति हर समय बनी रहे तो मर जाओ। (मुस्लिम किताबुल तौब:) मूल बात यह है कि अगर हर समय एक ही स्थिति रहे तो फिर बढ़ने और विकसित करने की शक्ति छिन जाती है। इसलिए अल्लाह तआला कभी तो मूल स्थिति से नीचे कर देता है ताकि व्यक्ति कूद कर पहले से भी आगे बढ़ जाए और कभी ऊपर चढ़ा देता है। हाँ कब्ज़ संबंधित एक विशेष बात याद रखनी चाहिए और वह यह है कि एक कब्ज़ अच्छी होती है और एक बुरी और इन का पता इस तरह लग सकता है कि ज़िक्र के बारे में आनंद आने का एक दर्जा तय कर लिया जाए जैसे एक स्तर है इस से ऊपर 2, 3, 4, 5 स्तर हैं। अब अगर कोई व्यक्ति दो स्तर पर है और क़ब्ज़ उसे पहले स्तर पर ले जाती है तो समझना चाहिए कि इनाम दिलाने वाली क़ब्ज़ है। लेकिन अगर तीन दर्जा पर हो और फिर क़ब्ज़ हो तो देखना चाहिए कि अब क़ब्ज़ दो दर्जा पर ले गई है या एक दर्जा पर या बिल्कुल शून्य पर। अगर दो स्तर पर हो तो समझना चाहिए अब क़ब्ज़ दो स्तर पर ले गई है। यदि दो स्तर पर हो तो समझना चाहिए कि तरक्की दिलाने वाली है और अगर एक या शून्य के दर्जा पर हो तो खतरे का स्थान है इसके लिए विशेष प्रयास और कोशिश करनी चाहिए।" **(पुस्तक- ज़िक्रे इलाही, पृष्ठ 25-37)**

☆ ☆ ☆

METRO PLASTIC PRODUCTS
YUBA
QUALITY FOOTWEAR
E-mail:yuba.metro@yahoo.com
{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}
H&O & FACTORY:20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Asifbhai Mansoori
9998926311
Sabbirbhai
9925900467
LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover
E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123
B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS
21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

सिलसिला अहमदिया (अर्थात अहमदियत का परिचय) जिल्द-1

(लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब M.A.)

(भाग-29) अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

...यह ज़माना जमाअत के लिए एक अत्यंत कठिन ज़माना था जिससे एक ऊंचे और तेज़ धार वाले पर्वत की चढ़ाई से समानता दी जा सकती है। निस्संदेह जमाअत की उन्नति का कदम कभी नहीं रुका परंतु इस भयानक विरोध के मुकाबले पर जिसने जमाअत को चारों ओर से घेर रखा था उसकी रफ्तार इतनी धीमी थी कि उसके शत्रु हर क्षण यह आशा लगाए बैठे थे कि बस यह सिलसिला आज भी मिटा और कल भी मिटा और स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए भी यह आरंभिक युग अत्यंत चिंता और भय का युग था और जमाअत की यह रेंगने वाली चाल आपकी बिजली के समान उड़ने वाली रूह को बेताब कर रही थी परंतु आप जानते थे कि हर नबी के युग में यही हुआ करता है और इस कठोर परीक्षा में से गुज़रे बिना चारा नहीं और स्वयं जमाअत की दृढ़ता और शिष्टाचार में उन्नति के लिए भी विरोध आवश्यक है। अत: आप ने साहस नहीं छोड़ा और आपकी फौलादी कीलें धीरे-धीरे परंतु निश्चित और अटल रूप में आगे ही आगे धसती गई यहां तक कि उस युग में जिसका हम इस समय वर्णन कर रहे हैं अर्थात उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में जमाअत अहमदिया की संख्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपने अनुमान में 30,000 के निकट पहुंच चुकी थी। यह संख्या जमाअत के आरंभ के लिहाज़ से बहुत बड़ी संख्या थी परंतु इस की इंतेहा और इस के उद्देश्य के लिहाज़ से इतनी भी नहीं थी जिसे आटे में नमक कहा जा सके और अभी आपका कार्य एक ऊंचे पर्वत के समान आपके सामने खड़ा था। यह ठीक है कि नबी का कार्य केवल बीज डालना होता है परंतु फिर भी बीज डालने का कार्य भी कुछ समय लेता है और फिर कौन सा बागबान यह इच्छा नहीं रखता कि वह अपने बीज डालने का थोड़ा सा फल स्वयं अपनी आंखों से भी देख ले निस्संदेह नबी का कार्य स्वार्थपरता पर आधारित नहीं होता और वह अपने बाद में आने वाली उन्नतियों को भी उसी दृष्टि से देखता है जिस तरह वह अपने समय की उन्नति को देखता है परंतु फिर भी वह इंसान होता है और उसका दिल उन भावनाओं से खाली नहीं होता कि उन उन्नतियों की थोड़ी सी झलक उसे भी नज़र आ जाए। निसंदेह वह मिट्टी में छुपे हुए बीच को भी एक वृक्ष की सूरत में देखता है परंतु उसकी मानवीय भावनाओं का दिल इस इच्छा से ऊपर नहीं होता कि यह कम से कम उस बीज को मिट्टी से बाहर निकलता हुआ तो देख लूं। यह वे भावनाएं थी जो इन दिनों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिलों दिमाग पर छाई हुई थी और उस तेज़ घुड़सवार के समान जिसके घोड़े के पांव में बेड़ियाँ पड़ी हुई हो। आप उन बेड़ियों को तोड़ कर हवा हो जाने के लिए बेचैन हो रहे थे। ख़ुदा ने अपनी कृपा से आपको उस दिन की थोड़ी सी रोशनी दिखा भी दी कि जब आप की तैयार की हुई जमाअत उड़ने के योग्य तो नहीं परन्तु तेज़ गति से चलने के योग्य हो गई। लेकिन इन परिस्थितियों के वर्णन के लिए अगले पृष्ठ हैं जिनके लिए हमें जल्दी की आवश्यकता नहीं।

इस समय तक जो जमाअत की उन्नति हुई उसके कारण विभिन्न थे जिनमें से हम कुछ का इस स्थान

पर संक्षिप्त रूप में वर्णन करते हैं :

प्रथम एक बहुत बड़ा अत्यंत प्रभावित कारण स्वयं हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का अस्तित्व था आपको अल्लाह तआला ने ऐसा आकर्षक अस्तित्व प्रदान किया था कि वह अपने साथ संबंध रखने वाली रूह को तुरंत अपनी और खींच लेता था और यह बात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ ही विशेष नहीं थी अपितु हर नबी की सफलता का एक बड़ा माध्यम उसका निजी प्रभाव होता है। निस्संदेह यह ठीक है कि निजी प्रभाव किसी नबी में कम होता है और किसी में अधिक परंतु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अस्तित्व में यह प्रभाव आपके अनुकरणीय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो वाले वसल्लम के समान अपनी पूर्णता को पहुंचा हुआ था। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

अगर खवाही दलील-ए-आशकश बाश
मुहम्मद हस्त बुरहाने मुहम्मद

"अर्थात हे सत्याभिलाषी मनुष्य! यदि तू मुहम्मद स.अ.व. के सत्यापन का प्रमाण चाहता है तो आप स.अ.व. का प्रेमी बन जा क्योंकि मुहम्मद स.अ.व. का सबसे बड़ा प्रमाण स्वयं मुहम्मद स.अ.व. का अपना अस्तित्व है"

यही प्रमाण उसी सच्चाई और उसी दिन के साथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर भी चरितार्थ होता है। सैकड़ों हज़ारों लोग ऐसे हैं जिन्होंने केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मुख देख कर बिना किसी तर्क के आपको मान लिया और उनकी ज़बान से स्वत: यह शब्द निकले कि यह मुख झूठों का नहीं हो सकता। सैकड़ों हज़ारों ऐसे हैं जो केवल कुछ दिन साथ रह कर हमेशा के लिए मेरे हो गए और फिर उन्होंने आप की गुलामी को समस्त गौरवों से बड़ा गौरव जाना।

अत: आप की सफलताओं का एक बड़ा कारण आप का अस्तित्व और आप के शिष्टाचार और आध्यात्मिक प्रभाव था। यह ठीक है कि कुछ लोगों ने बावजूद आपके साथ मिलने और आपकी सभाओं में आने-जाने के आपको नहीं माना लेकिन यह आप की ग़लती नहीं अपितु स्वयं उन लोगों की अपनी ग़लती थी क्योंकि एक बड़े से बड़ा चुंबकीय आकर्षण भी मिट्टी के ढेले को खींच नहीं सकता और ऐसे दुष्ट लोगों का अस्तित्व प्रत्येक नबी के युग में पाया जाता रहा है जिसके कारण से उनके आकर्षण की शक्ति कम नहीं समझी जा सकती। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपनी इस ईश्वर प्रदत शक्ति का स्वयं भी अनुभव था अत: आप अपने विरोधियों को अधिकतर कहा करते थे कि कुछ दिन विरोध छोड़ कर मेरे पास आ कर रहो और मैं आशा करता हूं कि अल्लाह तआला तुम्हारे लिए स्वयं कोई मार्ग खोल देगा। कुछ लोगों ने आपके इस आध्यात्मिक प्रभाव को जादू के नाम से ताबीर किया और प्रसिद्ध किया कि मिर्ज़ा साहब के पास कोई न जाए क्योंकि वह जादू कर देते हैं। परंतु यह जादू नहीं था अपितु आप की आध्यात्मिकता का ज़बरदस्त आकर्षण था जो लोगों को अपनी ओर खींचता था और आध्यात्मिक प्रभाव के अतिरिक्त आपके शिष्टाचार भी ऐसे उच्च और बुलंद थे कि प्रत्येक व्यक्ति जो आपके साथ मिलता था वह आप का अनुयायी बन जाता था। (पृष्ठ 95 से 98)

☆ ☆ ☆

मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन

(हज़रत मौलवी नूरुद्दीन[रज़ि] ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम की जीवनी)

(भाग- 29) अनुवादक - फ़रहत अहमद आचार्य

..मुंशी साहब को दिन प्रतिदिन मुझसे मोहब्बत बढ़ती जाती थी उनके दरबार में एक दिन कोई आचरण संबंधी विषय प्रस्तुत हुआ मैं भी वहां उपस्थित था शहर के काज़ी ने शाह इसहाक साहब के बारे में कोई कठोर शब्द बोला केवल इतने स्वाभिमान पर मैं वहां से उठ कर चला आया। भोजन के समय मैं मुंशी साहब के यहां नहीं गया। वह मुझसे इतनी मोहब्बत करते थे कि उस दिन स्वयं भी खाना नहीं खाया। मैं ज़माने से अनुभवहीन और अज्ञान था मुझको खबर नहीं थी कि मुझसे इतनी मोहब्बत करते हैं। दूसरे दिन उन्होंने किसी आदमी से पूछा कि नूरुद्दीन असर की नमाज़ कहां पढ़ते हैं उसने कहा कि तोशाखाना (वह स्थान जहां खाने-पीने का सामान राहत है) के पास वाली मस्जिद में। मैं वहां असर की नमाज़ पढ़ता था स्वयं मुंशी साहब मेरे दाएं तरफ आकर बैठ गए मैंने जो सलाम फेरा और कहा अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह, तुरंत कहने लगे ओहो आपने तो पहल कर दी। मेरा हाथ पकड़ कर उठा लिया एक बैलगाड़ी में जिसको वहां चरट कहते थे उसमें अपने साथ सवार करके शहर के बाहर बहुत दूर ले गए। बाहर जाकर मुझसे कहा कि आपने तो कल से हम को भूखा रखा है मैंने कहा कि आप की महफिल में शाह इस्हाक साहब की बुराई होती है और मैं तो शाह साहब का आशिक हूं। मुंशी साहब ने फरमाया आप ने शाह साहब को देखा है? मैंने कहा नहीं। मुंशी साहब ने फरमाया मैंने तो शाह साहब की सेवा में कुरान शरीफ पढ़ा है। मैं शिया था और बहुत कट्टर शिया था परंतु हमारा घर दिल्ली में ऐसी जगह था कि शाह साहब के सामने से होकर जाना पड़ता था।

आखिर मैं शाह साहब के दरस में सम्मिलित हुआ और उन्हीं की संगत का परिणाम है कि मैं मौजूदा हालत को पहुंचा। फिर अपना सारा किस्सा शिया होने का और सुन्नी होने का सुनाया और कहा कि मैं शाह साहब का बहुत आस्थावान हूँ परंतु वह एक सरकारी मामला था जिसमें उस समय मुझको बोलना उचित न था और यह लोग ऐसे ही हैं उनकी बातों की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए। यह कहकर यक्के को लौटाया और मुझको अपने मकान पर ले गए खाना खाया और मुझसे कहा कि आप ऐसी बातों ज्यादा तवज्जो न दिया करें। मैंने उनकी पवित्र क़ुरान की आयतों से मोहब्बत और कुरान के लिए समर्पण इस तरह देखा कि मुझको याद नहीं कि किसी और को ऐसा देखा हो।

एक बार मैं मुंशी जमालुद्दीन साहब के साथ उनके बाग में जा रहा था कि रास्ते में उन्होंने पूछा حَتّٰۤى اِذَا مَا جَآءُوۡهَا شَهِدَ عَلَيۡهِمۡ जिस प्रकार مَا (मा) से पहले "इज़ा" आया है अरबी के किसी शेर में उसका उदाहरण मौजूद है? बचपन की हालत भी क्या बुरी होती है मैं और उनका नवासा (नाती) मोहम्मद नामी यकके में एक सीट पर बैठे थे और सामने की सीट पर मुंशी साहब थे, मेरे मुंह से यकायक यह शेर निकल गया :

اذا ما بکی من خلفها انصرفت له
بشق و تحتی شقها لم تحول

पढ़ने को तो यह शेर मैंने पढ़ दिया मगर इस हालत को कोई क्या समझ सकता है जब उन्होंने कहा कि शेर का तर्जुमा करो। मैंने मियां मोहम्मद की तरफ देखा और उन्होंने मुंह के सामने कोई चीज़ करके गर्दन झुकाई और मुस्कुराने लगे। वह भी खामोश और मैं भी चुप। मुंशी साहब बहुत ही सज्जन स्वभाव के व्यक्ति थे। वह फौरन समझ गए कि यह कोई अभद्र शेर होगा और बात को टाल दिया और बातचीत का सिलसिला शुरू कर दिया। उस दिन मुझको यह सबक मिला कि बात को मुंह से निकालने से पहले इंसान को उसके परिणामके बारे में सोच लेना चाहिए। यद्यपि कभी-कभी अधिक सोच-विचार इंसान को नुकसान भी पहुंचा देता है परंतु उसकी भरपाई दुआओं से हो सकती है। मुझको अपनी इस हरकत पर बड़ा आश्चर्य हुआ परंतु उनकी शराफत देखो कि किसी दिन भी उन्होंने इस शेर के बारे में मुझसे न पूछा।

भोपाल में मैं दो बार गया हूं विद्यार्थी जीवन में तो यही काफी है कि मैंने बुखारी और हिदाया मौलवी अब्दुल कयूम साहब और हदीस निरंतर मैंने वहां के मुफ्ती साहब से सुनी। अल्लाह तआला उनको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। जो उन्होंने मोहम्मद बिन नासिर हज़रमी से रिवायत की।

मोहम्मद बिन नासिर हज़रमी का एक किस्सा मुझको मुंशी साहब ने सुनाया कि एक बार वह मेरे मकान पर आए क्योंकि बड़े सज्जन और प्रसिद्ध व्यक्ति थे मैंने 1000 रु की थैली उनके सामने रखी। यह देख कर उनके चेहरे पर बड़ा परिवर्तन और नाराज़गी के लक्षण प्रदर्शित हुए। मैंने वह तुरंत उठा कर अपने सामने रख ली तो उनके चेहरे पर खुशी के लक्षण प्रदर्शित हुए और मैं हंस पड़ा। वह कहने लगे कि तुम क्यों हंसे? मैंने कहा कि मैंने रुपए आपके सामने रखा तो आपका चेहरा परिवर्तित हो गया और जब मैंने रुपए उठा लिए तो आपके चेहरे पर खुशी के लक्षण प्रदर्शित हुए? कहने लगे कि हां हमारा इरादा था कि आपके पास आया करेंगे और आपको हदीस सुनाएंगे जब आपने रुपया रखा तो हमको दुख हुआ कि यह तो दुनियादार आदमी है और हदीस में आया है कि रुपए कोई दे तो वापस न करो इसलिए हम रुपए तो ले लेते मगर रुपए लेकर फिर हदीस न सुनाते। अब मालूम हुआ कि तुम बड़े बुद्धिमान व्यक्ति हो इसलिए अवश्य आया करेंगे और तुमको हदीस सुनाएंगे। यह भी फरमाने लगे कि हमको रुपए की आवश्यकता नहीं हमारे घर इतने खजूरें पैदा हो जाती हैं जो साल भर के लिए पर्याप्त होती हैं। हमारे घर के ऊंट हैं एक ओर ऊंट पर खजूर लाद लेते हैं दूसरी ओर गुलाम को सवार कर लेते हैं, पानी का मुश्कीज़ा अपने पास रख लेते हैं, इसी तरह हज को जाते हैं और दूर-दूर सफर कर आते हैं। अल्हम्दुलिल्लाह किसी चीज़ की और आवश्यकता नहीं। यह किस्सा स्वयं मुंशी जमालुद्दीन साहब ने बिना किसी लाँग-लपेट के सुनाया। मोहम्मद बिन नासिर हज़रमी (हज़र मौत के रहने वाले) जब बात करते थे तो बहुत जल्दी जल्दी बिना थके ज़बान से शब्द निकलते थे परंतु कोई शब्द कुरान और हदीस के शब्दों से बाहर न होता।

मुंशी जमालुद्दीन साहब की एक यह बात देखी कि वह हमेशा अंधे पुरुष या अंधी स्त्री की तलाश में रहते थे और दूर-दूर से बुलाते थे कभी स्त्री पुरुष दोनों अंधे होते थे और उनकी शादी कर

देते थे और कभी दोनों में एक ही अंधा होता था उन सब का तमाम खर्च स्वयं बर्दाश्त करते थे और उनका एक मोहल्ला आबाद किया था उनके जो बच्चे होते थे उनके लिए उसी मोहल्ले में एक मदरसा भी जारी किया था।

एक दिन एक लड़के को जिसके मां-बाप दोनों अंधे थे, देखकर मुंशी साहब भावुक हो गए मुझसे कहने लगे कि देखो उसकी दोनों आंखें कैसी अच्छी हैं। वहां दूर-दूर के अंधे इकट्ठे थे यहां तक कि एक सियालकोट का भी था। मुंशी साहब अर्थव्यवस्था के बड़े विद्वान थे उनके लिए कंधे का एक किलो गोश्त विशेष रूप से पकता था। एक समय खाना खाते थे और उस गोश्त में कई आदमियों को सम्मिलित कर लेते थे। एक दिन मुझसे कहने लगे कि मैं नौजवान था जब यहां नौकर हुआ। मैंने तीन रुपए से अधिक का गोश्त अब तक नहीं खाया। मुझ को सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ तो कहने लगे कि मैं तीन रुपए का एक बकरा प्रतिदिन खरीदता हूं और नमाज़ फजर के बाद उसको ज़िबह कर देता हूं। एक किलो गोश्त उसमें से निकलवा कर बाकी पर एक सिपाही नियुक्त कर देता हूं कि उसके तीन रुपए वसूल कर ले। वह बाकी गोश्त पोस्त तुरंत तीन रुपए में बेच देता है और लोग सुबह-सुबह आकर सब खरीद कर ले जाते हैं। इस तरह प्रतिदिन हमारे तीन रुपए बच जाते हैं। यह तरीका उन्होंने अपने बहुत से खाने पीने में निर्धारित कर रखा था परंतु मुझको तो केवल गोश्त का हाल सुनाया था।

भोपाल की घटनाएं बहुत ही विचित्र हैं परंतु चिकित्सकीय मामलों के बारे में केवल यह बात वर्णन करने योग्य है कि मैंने बहुत ही अच्छी दो सदरियाँ बनवाई थीं जिनके पहनने की हमेशा मुझे आदत थी उनमें से एक चोरी हो गई। मुझे विश्वास हुआ कि विद्यार्थी जीवन की अवस्था में यह एक मुसीबत है और मुसीबत पर सब्र करने वाले को उसका उत्तम बदला मिलता है। दूसरी सदरी को मैंने उसके शुक्रिया में दे दिया। थोड़े दिनों के बाद एक मालदार व्यक्ति के लड़के को सोज़ाक नामक रोग हो गया (जिसमें मूत्र मार्ग में घाव हो जाते हैं) उसने अपने नौकर को कहा कि कोई ऐसा वैद्य (डाक्टर) बुलाकर लाओ जिसको लोग न जानते हों, परंतु वह बनी हुई दवा न दे बल्कि सरल दवा बता दे। वह दवा ऐसी न हो कि जिसके बनाने में मुझे आम नौकरों को बताना पड़े। जिनसे उसने कहा था उनका नाम पीर अबू अहमद मुजद्दिदी था उन्होंने कहा कि एक विद्यार्थी वैद्य है और उसके वैद्य होने से लोग अपरिचित हैं, मैं उसको अपने साथ लाऊंगा। अत: वह मुझको वहां ले गए।

वह नौजवान अपने घर के सामने एक कुर्सी पर बैठा हुआ था वहां एक बगीचा भी था वहीं हमारे लिए कुर्सियां मंगवाई गईं। मैंने उसका हाल पूछ कर कहा कि केले की जड़ का एक छटांक पानी साफ करके उसमें यह शोरह कलमी जो आपके बरामदे में बारूद के लिए रखा है, मिलाकर कई बार पीओ और शाम तक मुझे सूचित करें। मैं कह कर चला आया और खुदा की कुदरत से उसको शाम तक काफी आराम मिल गया उसने मुझे एक बहुत कीमती वस्त्र और इतना रुपया दिया कि मुझ पर हज करना फर्ज हो गया। (मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन, पृष्ठ 101-105)

☆ ☆ ☆

अहमदिय्या जमाअत में दीक्षित होने (बैअत करने) की शर्ते

अनुवादक - सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

अहमदिया मुस्लिम जमाअत् के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत् में सम्मिलित होने के लिए निम्नलिखित शर्तें रखीं:

प्रथम : बैअत करने वाला (दीक्षित होने वाला) सच्चे दिल से इस बात की प्रतिज्ञा करे कि भविष्य में उस समय तक कि कब्र में दाख़िल हो जाए शिर्क (अल्लाह तआला के साथ देवी–देवताओं और अन्य सृष्टि की उपासना का सिद्धान्त अर्थात् अनेकश्वरवाद) से बचता रहेगा।

द्वितीय : यह कि झूठ और व्यभिचार और बुरी दृष्टि और प्रत्येक दुराचार और अत्याचार और ख़यानत (धरोहर को हानि पहुँचाना) और कलह और विद्रोह की नीतियों से बचता रहेगा और तामसिक आवेगों के समय उनके वशीभूत नहीं होगा चाहे कैसा ही उत्तेजक भाव पेश आए।

तृतीय : यह कि ख़ुदा और उसके रसूल के आदेशानुसार पाँचो समय की नमाज़ बिला नाग़ा अदा करता रहेगा और यथाशक्ति तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने और अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने और प्रत्येक दिन अपने गुनाहों की माफ़ी माँगने और क्षमायाचना करने में निरन्तर लगा रहेगा और हार्दिक प्रेम से ख़ुदा तआला के उपकारों को याद करके उसकी स्मृति और प्रशंसा करना प्रतिदिन का नियम बनाएगा।

चतुर्थ : यह कि सामान्य रूप से सम्पूर्ण मानव-समाज और विशेषकर मुसलमानों को अपने तामसिक आवेगों के समय किसी प्रकार का अनुचित कष्ट नहीं पहुँचाएगा, न वाणी से, न हाथ से, न किसी अन्य प्रकार से ।

पंचम : यह कि प्रत्येक अवस्था सुख-दु:ख, सम्पन्नता-विपन्नता और सम्पदा-आपदा– में ख़ुदा तआला के साथ वफ़ादारी करेगा और प्रत्येक स्थिति में अल्लाह तआला के निर्णय पर राज़ी होगा और उसके मार्ग में प्रत्येक अपमान और दु:ख को स्वीकार करने के लिए तैयार रहेगा और किसी विपत्ति में आने पर मुँह नहीं फेरेगा अपितु आगे कदम बढ़ाएगा।

षष्टम : यह कि रूढ़ियों और लोभ लालसा के अनुसरण से रुक जाएगा और क़ुर्आन शरीफ की आदेशों को पूर्ण रूप से स्वीकार करेगा और अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों को अपनी प्रत्येक अवस्था में नियम बना लेगा।

सप्तम : यह कि अहंकार और अभिमान को सर्वथा त्याग देगा और शालीनता और सदाचार और दीनता और निरीहता और नम्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करेगा।

अष्टम : यह कि धर्म और धर्म की प्रतिष्ठा और इस्लाम के प्रति सहानुभूति को अपने प्राण और अपने धन और अपनी मान-मर्यादा और अपनी सन्तान और अपने प्रत्येक प्रिय सम्बन्धी से प्रियतम समझेगा।

नवम : यह कि प्रभु की समस्त दृष्टि के प्रति सहानुभूति में केवल मात्र अल्लाह तआला के लिए लगा रहेगा और यथासम्भव अपनी ईश्वर प्रदत शक्तियों और वरदानों से मानव समाज को लाभ पहुँचाएगा।

दशम : यह कि इस विनीत के साथ केवल मात्र ख़ुदा तआला के भ्रातृ-सम्बन्ध, पुण्यादेशों के पालन के द्वारा स्थापित करके उस पर मरने तक क़ायम रहेगा। और इस भ्रातृ-सम्बन्ध में ऐसा उच्च कोटि का होगा कि उसका उदाहरण सांसारिक रिश्तों और सम्बन्धों और समस्त सेवकजन्य अवस्थाओं में पाया न जाता हो। (इश्तिहार तक्मील-ए-तब्लीग़ 12 जनवरी सन् 1889 ई.)

बैअत क्या है?

सबसे पहली बात तो यह है कि बैअत है क्या? उसकी व्याख्या मैं हदीसों एवं हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरणों से करता हूँ।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं "यह बैअत जिसका वास्तविक अर्थ यह है कि अपने आपको बेच देना। उसकी बरकतें और तासीरें (असर) इसी बैअत की शर्त से संबंधित हैं। जैसे एक बीज ज़मीन में बोया जाता है । तो उसकी प्रारम्भिक अवस्था यही होती है कि जैसे वह किसीन के हाथ से बोया गया और इसका कुछ पता नहीं कि अब वह क्या होगा? लेकिन यदि वह बीज अच्छा होता है और उसमें उगने की ताकत मौजूद होती है तो ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) से और उस किसीन की कोशिश से वह ऊपर आता है और एक दाना से हज़ार दाना बनता है इसी तरह बैअत करने वाले को पहले ख़ाकसारी एवं नम्रता इख़्तियार करनी पड़ती है। और अपने अहंकार और घमण्ड से दूर होना पड़ता है। तब वह तरक़्क़ी के क़ाबिल होता है। लेकिन जो बैअत के साथ अहंकार भी रखता है उसे फ़ैज़ (बरकत) कदापि प्राप्त नहीं होती।" (मलफ़ूज़ात, जिल्द 6 पृष्ठ 173)

बैअत से तात्पर्य ख़ुदा तआला को जान सुपुर्द करना है।

फिर आप फ़र्माते हैं "बैअत से तात्पर्य ख़ुदा तआला को जान सुपुर्द करना है। जिसका मतलब है कि हमने अपनी जान आज ख़ुदा तआला के हाथ बेच दी है। यह बात पूर्णत: ग़लत है कि ख़ुदा तआला की राह में चलकर अन्तत: कोई इन्सान नुकसान उठावे। सच्चा कभी नुकसान नहीं उठा सकता। नुकसान उसी का होता है जो झूठा है। और दुनिया के लिए ख़ुदा तआला से की हुई बैअत के वादे तोड़ रहा है। वह इन्सान जो सिर्फ दुनिया के डर से ऐसे काम कर रहा है वह याद रखे कि मौत के समय कोई हाकिम या बादशाह उसे छुड़ा न सकेगा। उसने सबसे बड़े बादशाह के पास जाना है जो उससे पूछेगा कि तूने मेरा लिहाज़ क्यों नहीं रखा? इसलिए प्रत्येक मोमिन के लिए आवश्यक है कि ख़ुदा जो ज़मीन व आसमान का मालिक है उस पर ईमान लावे और सच्ची तौबा करे।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 8, पृष्ठ 29, 30)

☆ ☆ ☆

वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है (4)

लेखक - आसिफ महमूद बासित साहिब **(भाग – 21)** अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

बैतुल फुतूह में एम-टी-ए के दफ्तर आने से पहले दिसंबर 2004 से अगस्त 2009 तक विनीत एम-टी-ए के दफ्तर जो के मस्जिद लंदन में स्थित है, में नियुक्त था। यहां सबसे बड़ा वरदान तो यह प्राप्त था कि समस्त नमाज़ें हुज़ूर अनवर के अनुसरण में पढ़ने का अवसर मिल जाता था। एक और रोचक बात यह थी कि हुज़ूर अनवर कुछ महीने के वक्फे से किसी भी समय एम-टी-ए में पधारते। ऐसे अवसर पर हमारी तो ईद हो जाती थी। जो कुछ पल हुज़ूर अनवर एम-टी-ए में गुज़ारते वे आज तक हम सब कारकुनों के दिलों में सुरक्षित हैं। पारस्परिक वार्तालाप में कहीं न कहीं कोई न कोई बड़ा आनंद लेते हुए किसी ऐसे ही अवसर पर हुज़ूर के आदेश का कोई वर्णन कर देता है जैसे ही हमें किसी भी प्रकार मालूम हो जाता कि हुज़ूर अनवर एम-टी-ए पधार रहे हैं तो हम सब अपने दफ्तरों और मेज़ों की शक्ल सूरत संवारने में लग जाते। ऐसे में जो होता है वह आप जानते ही हैं अर्थात वह जो हालत है कि कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं जैसे किसी ग़रीब के घर कोई बहुत उच्च श्रेणी का मेहमान आ जाए तो अपना तो अपना समस्त समान चारपाइयों के नीचे और अलमारी में घुसा कर बाहरी सफाई सुथराई का प्रबंध करने लगता है। वही अवस्था हमारी होती, समस्त काग़ज़ समेट कर किसी एक फाइल में रख लिए, जल्दी-जल्दी झाड़-पोंछ आरंभ कर दी। इतने में हुज़ूर से पहले हुज़ूर की खुशबू आ जाती और फिर हुज़ूर अनवर के मुबारक कदम हमारे दफ्तर में पड़ते थे। एक से अधिक बार ऐसा हुआ कि साथ कुछ कृपालुतापूर्ण वार्तालाप करते और साथ ही चलते हुए दफ्तर की उस अलमारी के सामने पहुंच जाते जहां हम ग़रीबों ने सारा समान ठोंस रखा था। उसे खोला, हालत देखी और फिर अलमारी बंद कर दी। साथ आदेश फ़रमा दिया कि चीज़ें ऐसे बेतरतीब नहीं होनी चाहिए "मैं तो खुद अपने दफ्तर की सफाई करता हूं। एक ब्रश रखा हुआ है खुद ही सुबह आकर उससे दफ्तर की झाड़-पोंछ कर लेता हूं। मैं कर लेता हूं तो तुम लोग क्यों नहीं कर सकते?"

केवल निराशा, उत्तर में प्रस्तुत करने को कुछ नहीं। परंतु दिल में आगे के लिए यह अहद कर लिया के प्रतिदिन दफ्तर की झाड़-पोंछ अवश्य करनी है और यह कि अब बस आगे से प्रत्येक चीज़ तरतीब से अपने स्थान पर रखनी है। आगे से ऐसे अवस्था नहीं होगी।

अब हुआ यह कि हम प्रतिदिन यह आयोजन करने लगे कि हर चीज़ तरतीब से पड़ी हो परंतु हुज़ूर आए ही नहीं। कई महीने यों ही गुज़र गए। प्रतिदिन प्रतीक्षा होती कि संभवत: आज, संभवत: कल, संभवत: परसों परंतु प्रतीक्षा लंबी होती गई।

फिर एक दिन हमारा भाग्य खुला और हुज़ूर अनवर अचानक एम-टी-ए में तशरीफ ले आए। दिल में यह विश्वास कि आज तो कुछ भी बेतरतीब नहीं, पधारे, बड़े प्रेम पूर्वक, कुछ देर दफ्तर में ठहरे, कुछ बातें पूछी, यहां कौन रहता है? यह किसका मेज़ है? यह किस-किस की फाइल है? इत्यादि। और मैं दिल में प्रसन्न

कि आज सब अच्छा रहा। अचानक हुज़ूर ने उस छोटी सी अलमारी का दरवाज़ा खोला जिसमें खाने की प्लेटें और पिरचें प्यालियाँ रखी थी। हमारे एक मित्र ने लंगर से आने वाले खाने के गुलों में रंग भरने के लिए अंदर अचार का एक डिब्बा रख छोड़ा था। यद्यपि वह इसका ढक्कन बहुत ज़ोर से बंद करके रखते थे परंतु हम सब जानते हैं कि अचार अपनी मर्ज़ी का मालिक होता है और इश्क और मुश्क की तरह अपनी उपस्थिति का स्वयं अनुभव कराता है। उसे देखा और फ़रमाया ऐसी चीज़ें यदि कमरे में पड़ी हों तो कमरे में बदबू फैल जाती है। हो सकता है कि आदी हो जाने के कारण हमें स्वयं अनुभव न हो परन्तु आने-जाने वाले को अनुभव हो जाता है। यह एम-टी-ए का दफ्तर है यहां तो बाहर से भी मेहमान आते हैं। इन पर किसी भी तरह बुरा प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। जमाअत से संबंधित विभाग को किस बारीकी से हर बात का ख्याल रखना चाहिए यह सबक हुज़ूर की इस बात से कितना अधिक स्पष्ट है। (पृष्ठ 8-10)

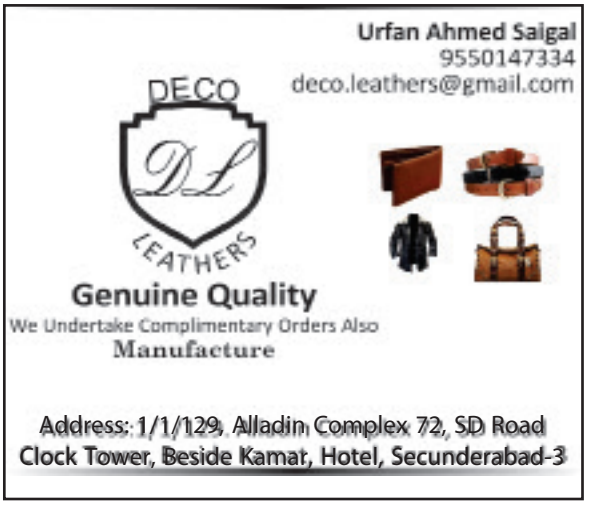

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

SWARAJ

सलाम मोटर्स

अधिकृत विक्रेता
स्वराज ट्रेक्टर: सेल्स व सर्विस ब्यावर

मो. यूसुफ काठात
9460458032

अताउल्लाह खान
8696714040

SINCE 1974

शोरूम : मसूदा रोड, चुंगी नाका के पास, ब्यावर

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Allah not sufficient for HIS servant

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone, Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में अपनी राय (feed back) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको को अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करता है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मजलिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं:-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

अहमदिया मुस्लिम जमाअत् के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

''मैं सच कहता हूँ कि दूसरों के प्रति कुविचार ऐसा भयंकर रोग है जो मनुष्य के ईमान को नष्ट कर देता है और श्रद्धा और सत्य के पथ से भ्रष्ट करके दूर फेंक देता है और मित्रों को शत्रु बना देता है। सिददीकों (अर्थात सत्यनिष्ठों) जैसी विशेषताएँ प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य दूसरों के प्रति कुविचार से बहुत ही बचे। यदि किसी के सम्बन्ध में कोई दूषित विचार पैदा हो तो अत्यधिक इस्तिग़फ़ार (ईश्वर से क्षमा याचना) करे तथा ख़ुदा से दुआएँ करे ताकि उस पाप और उसके दुष्परिणाम से बच जाए जो उस कुविचार के पीछे आने वाला है। इसको कभी साधारण बात नहीं समझना चाहिए। यह अति भयंकर रोग है जिससे मनुष्य का शीघ्र ही सर्वनाश हो जाता है।'' (मल्फ़ूज़ात भाग-1, पृष्ठ-372)